

आजाद सिपाही



वीर शहीद पोटो हो

की क्रांतिकारी भूमि कोल्हान प्रमंडल
की लाखों माता-बहनों को

रवृथियों का उपहार

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना के तहत

श्री हेमन्त सोरेन

माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड



हर बहना को
हर साल
₹ 12 हजार

सम्मान दारी का कदेंगे हस्तांतरण

28 अगस्त, 2024 | अपराह्न 12:00 बजे से

फुटबॉल मैदान, रापचा, गम्हारिया, सरायकेला-एवरसावा

कोल्हान प्रमंडल (सरायकेला-एवरसावा,
पूर्वी सिंहभूम और पश्चिमी सिंहभूम)
की सभी बहनों का समारोह में स्वागत है

48 लाख से अधिक निबंधन

लगभग 45 लाख बहनों के आवेदन स्वीकृत

31 अगस्त से पहले सभी बहनों के खातों में होगी
एक हजार रुपये की सम्मान दारी (पहली किस्त)

सितंबर से हर महीने की 15 तारीख को हर बहन
के खाते में पहुँचेगी सम्मान दारी



हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

टाइगर के बिना कितना सुरक्षित रहेगा झामुमो का कोल्हान दुर्घ

■ भाजपा को भरोसा, टाइगर की मदद से कोल्हान में पकड़ होगी मजबूत

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन 30 अगस्त को भाजपा में शामिल होंगे। यह जानकारी खुल चंपाई सोरेन ने मंगलवार को दिल्ली में प्रक्रांतों को दी। उन्होंने कहा कि बुधवार को वह रांची पहुंच रहे हैं और भाजपा ज्वाइन करेंगे। इससे पूर्व असम के सीएम बिमता बिस्वा सरस्वा ने सोमवार देर रात जैसे ही चंपाई सोरेन की अमित शाह से मुलाकात वाली तस्वीर पोस्ट की, जिसमें चंपाई को बैठे बाबूलाल सोरेन और खुब हिमंता भी ही हैं, झारखंड की राजनीति में छाये रहेंगे, यह कन्फर्म था। लेकिन अपनी पार्टी बनायेंगे या भाजपा में जायेंगे, इसे लेकर अटकतों का बाजार गर्म था। खैर अब तस्वीर परी तरह से साफ हो चुकी है कि चंपाई सोरेन भगवा चोला पहन्हेंगे। भाजपा को भरोसा है कि चंपाई सोरेन के भगवा रंग में रंगने से झारखंड की



राकेश सिंह

चंपाई सोरेन का भाजपा में जाना जेएमएम के लिए एक कठिन चुनौती है। इसका असर जेएमएम की राजनीति पर किनार पड़ेगा, यह तो समय के गर्भ में है, लेकिन फिलहाल ज्ञामों के लिए उनकी टक्कर का नेता खड़ा करना आसान नहीं होगा। दरअसल, चंपाई सोरेन की चुनौती जेएमएम के सीनियर लीडर और पार्टी के संभंग के रूप में होती है। झारखंड के कोल्हान इलाके में उन्हें कोल्हान टाइगर के नाम से जाना जाता है। चंपाई सोरेन का असर कोल्हान टाइगर को बाजार गर्म होने को देखने को मिलता है। कहीं कम, कहीं ज्यादा हो जाती है। लेकिन चंपाई फैक्टर को इन्हें नहीं किया जा सकता। जेएमएम में इनके कद का कोई दुसरा नेता नहीं है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि जब जमीन धोटाला और मनी लाइंग मामले में हेमंत सोरेन जेल गये, तो उन्होंने घर-परिवार के सदस्यों से ज्यादा चंपाई सोरेन पर ही भरोसा किया और अपना भी कुर्सी छोड़ी। चंपाई सोरेन को न चाहते हुए भी कुर्सी छोड़ी पड़ी।

परिस्थितियों ने अचानक उस समय करवट ली, जब केंद्र सरकार ने तीन नये अपाराधिक कानून लागू किये। इसका स्वागत चंपाई सोरेन पर ही भरोसा किया गया। इसके बाद से कांग्रेस में कई तरह की चार्चाएं शुरू हो गयीं। कांग्रेस नेताओं के कान खड़कने लगे और इसकी सूचना हेमंत तक भी पहुंचायी गयी। इसी बीच राज्य में कुछ आईपीएस अधिकारियों की ट्रांसफर पोस्टिंग हुई। इसके बाद अटकतों का बाजार गर्म हो उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन सरकार ने 28 जून को राज्य पर 45 लाख महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन को नहीं बदला सकता है। उनके सपने को पूरा कर रहे हैं। लेकिन यहां से सावल यह उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन को नहीं बदला सकता है। उनके सपने को पूरा कर रहे हैं। लेकिन यहां से सावल यह उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन को नहीं बदला सकता है। उनके सपने को पूरा कर रहे हैं। लेकिन यहां से सावल यह उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन को नहीं बदला सकता है। उनके सपने को पूरा कर रहे हैं। लेकिन यहां से सावल यह उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन को नहीं बदला सकता है। उनके सपने को पूरा कर रहे हैं। लेकिन यहां से सावल यह उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन को नहीं बदला सकता है। उनके सपने को पूरा कर रहे हैं। लेकिन यहां से सावल यह उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ पूरी की तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गया। इसी क्षणी तो उसी कांग्रेस की शपथ की तरीकी से एक युप सक्रिय हो गयी। इसकी बात अटकतों को बाजार गर्म हो रही है।

झारखंड की चंपाई सोरेन को नहीं बदला सकता है। उनके सपने को पूरा कर रहे हैं। लेकिन यहां से सावल यह उठता है कि असर सोरेन परिवार, खासगत हेमंत सोरेन पर चंपाई सोरेन पर भरोसा जाता था, तो आखिर ऐसा क्या हुआ, जब पांच महीने में ही उन्हें सोरेन पर चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की लिए एक योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना को मुख्यमंत्री महीनों में ऐसा क्या हो गया, जिससे हेमंत सोरेन और चंपाई के बीच दूरीयां बढ़ती चली गयीं। जानकारों की मानें तो जैसे ही चंप

रांची

बुधवार, ग्रह 09, अंक 308

आजाद सिपाही

कलम कलम बढ़ाये जा



2019 का वादा था
5 लाख
झारखण्डी युवाओं
को

सरकारी
नौकरी
का

2024 तक आप में से
किसी
को

मिला
क्या?



चंपाई सोरेन आज रांची आयेंगे, मंत्रिपद और ज्ञामुमो से देंगे इस्तीफा

मैं बीजेपी ज्वाइन कर रहा कोई कुछ भी कहे : चंपाई

- केंद्र ने जेड प्लास सुरक्षा मुहैया करायी
- सायाकेला से एयरपोर्ट पहुंचे समर्थकों का क्राफिला

आजाद सिपाही संवाददाता

नवी दिल्ली। झारखण्ड के पूर्व सीएम और ज्ञामुमो के विरोध नेता चंपाई सोरेन 30 अगस्त को भाजपा में शामिल होंगे। दिल्ली में मंगलवार को मंडिया से बात करते हुए उन्होंने इसकी पुष्टि की। उन्होंने कहा, पहले मैंने सोचा था कि मैं संन्यास ले लूंगा। फिर मैंने सोचा कि नवा संगठन बनाऊंगा, लेकिन इसके लिए समय अधीक्षण है।

बहुत मंथन करने के बाद मेरा प्रधानमंत्री नंदें मोदी और गृह मंत्री अमित शाह विश्वास बढ़ गया है और भाजपा में शामिल होने का हमें निर्णय ले लिया है। भाजपा में मैं साथ मेरा बेटा बाबूलाल सोरेन भी शामिल होगा। बता दें कि सोबतार को उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री और बीजेपी के पूर्व अध्यक्ष अमित शाह से मुलाकात की थी। इस दौरान को सीएम और झारखण्ड के सह चुनाव प्रभारी हिमंत विजय सरमां और चंपाई के बेटे बाबूलाल सोरेन भी मैजूद हैं।

चंपाई सोरेन ने किया ट्वीट: मोदी-शाह के नेतृत्व में मेरी आस्था



वीरगंगाओं को अपना आदर्श मानने वाली हमारी माताओं, बहनों व बेटियों की अस्मत खतरे में है।

आदिवासियों एवं मूलवासियों को अधिक तथा सामाजिक तौर पर तेजी से उक्सासन पहुंचा रहे हैं। इन घुसपैठियों को अगर रोका नहीं गया, तो संथाल परगना में हमारे समाज का आदर्श अदावा करने वाले लोगों के बालाकोशी घुसपैठ बहुत बड़ी समस्या बन चुका है। इस से दुर्भाग्यपूर्ण क्या हो सकता है कि जिन बींगों ने जल, जंगल व जमीन की लडाई में कभी विदेशी अंग्रेजों की गुलामी ख्वाकर नहीं की, आज उनके बंशजों की जमीनों पर ये घुसपैठिये कब्जा कर रहे हैं।

इस मुद्दे पर सिर्फ भाजपा ही अंग्रेजों की बीजेपी के लिए असर नहीं देता है।

ये इस मुलाकात के बाद असम के सीपी ने सोशल मीडिया एक्सप्रेस पर इसकी पुष्टि की थी।

पार्टियों वोटों की खातिर इसे नज़र अंदर जारी कर रही है। इसलिए आदिवासी अस्मिना एवं अस्तित्व को बचाने के इस संघर्ष में, मैंने माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी एवं गृह मंत्री अमित शाह जी के नेतृत्व में आस्था जताते हुए भारतीय जनता पार्टी से जुड़ने का फैसला लिया है।

झारखण्ड के आदिवासियों, मूलवासियों, लोकियों, पिछड़ीयों, गरीबों, मजदूरों, किसानों, महिलाओं, युवाओं एवं आप लोगों के मुद्दे एवं अधिकारों के संघर्ष वाले इस नये अध्याय में आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

जमशेदपुर से हमारे संवाददाता के मुताबिक बुधवार को चंपाई सोरेन के आर्चिवासी अंग्रेजों ने उनके समर्थकों में उत्ताप्त है। उनका स्वागत करने के लिए, सरायकेला से उनके समर्थक रांची पहुंच रहे हैं।

तैयारी की जा रही है कि सरायकेला से जो काफिला रांची पहुंचे, उसमें कम से कम सौ गाड़ियां हों। इसे लेकर मंगलवार को उनके समर्थक तैयारी में जुटे थे। उनके समर्थक तैयारी में कहा जाना था कि हमारे नेता चंपाई सोरेन जो भी निर्णय लेंगे, हम उनके साथ हैं।

आपका,
चंपाई सोरेन

बीजेपी से गुपचुप मीटिंग को लेकर सवाल किया, तो चंपाई सोरेन ने कहा कि कोई कुछ भी बोले, मुझे फर्क नहीं पड़ता। झारखण्ड प्रदेश के लिए मेरा संघर्ष आने की तरह है। मैं बुधवार को दिल्ली से झारखण्ड के लिए जाऊंगा।

दिल्ली से लौटने के बाद चंपाई मीटिंग और झामुमो से दोनों इस्तीफी : दिल्ली में बीजेपी नेताओं से बातचीत की बुधवार को झारखण्ड लौटने के बाद चंपाई सोरेन हेमंत सोरेन मीटिंग और झारखण्ड मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देता है।

उपरांकित वार्ता को लेकर राजनीति वाले भड़के हैं। वह मंगलवार को जामा प्रखंड स्थित पांजनपहाड़ी में झारखण्ड मुख्यमंत्री सम्मान योजना के संताल परगना प्रमंडल स्थानीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

- सम्मान योजना को लेकर राज्यभर की महिलाओं में देखने को निल रहा है
- अद्भुत उत्साह जो आर्धी आबादी को

- मजबूत एवं सशक्त करेगा, वही राज्य आगे बढ़ेगा
- सरकार की योजनाओं से कोई विपरीत नहीं हो रही है, इसी सोच के साथ कर रहे हैं काम



मुख्यमंत्री ने कहा कि आधी आबादी को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारी सरकार विभिन्न योजनाओं के बढ़ावा। राज्य के विकास के लिए उपरांकित वार्ता को लेकर राजनीति वाले भड़के हैं। वह मंगलवार को जामा प्रखंड स्थित पांजनपहाड़ी में झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

सरकार आधी आबादी को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारी सरकार विभिन्न योजनाओं के बढ़ावा। राज्य के विकास के लिए महिलाओं के बढ़ावा। राज्य के विकास के लिए उपरांकित वार्ता को लेकर राजनीति वाले भड़के हैं। जरूरी है। यही वजह है कि हमारी

(शेष पेज 05 पर)

मुख्यमंत्री ने जामा से 7.32 लाख बहन-बेटियों को दिया मर्झियां सम्मान योजना का लाभ आपकी हर समस्या के समाधान की हो रही कोशिश : हेमंत सोरेन

- आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है
- झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आजाद सिपाही संवाददाता

दुमका। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा है कि झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां सम्मान योजना को लेकर राज्यभर की महिलाओं में जो उत्साह एवं खुशी देखने को मिल रही है, वह अवश्य है। आपका ये उत्साह हमें हर मुसीबत तथा चुनौती से लड़ने की ताकत देता है। आपकी योजनाओं में जो ग्रामीणों द्वारा उपरांकित वार्ता को लेकर राजनीति वाले भड़के हैं, वह अवश्य है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आधी आबादी को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारी सरकार विभिन्न योजनाओं के बढ़ावा। राज्य के विकास के लिए उपरांकित वार्ता को लेकर राजनीति वाले भड़के हैं। वह मंगलवार को जामा प्रखंड स्थित पांजनपहाड़ी में झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और चुनौती से लड़ने की ताकत देती है।

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंडियां

आपका भारतीय और उम्मीद हमें हर मुसीबत और

अल्बर्ट एकका चौक में दही-हांडी फोड़े प्रतियोगिता और नृत्य नाटिका देख भाविभाव हुए कृष्ण भक्त दही-हांडी फोड़े प्रतियोगिता का उद्घाटन राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने किया

आजाद सिपाही संचाददाता

भक्तिमय भजनों की उत्सव
थल पर हुई अमृत वर्षा
धनबाद से पधारे पिंड शर्मा, भजनों के समाइ अशं ज्योति पागल
लखनऊ से, कानपुर से पधारे सनी
सराज ने भजनों की गंगा प्रवाह
कर दी जाने का आनंद दिया। इनके भजनों
पर लोग धूमने पर मजाकूर हो गये
कृष्ण का नाशा ऐसा चढ़ा की लोग
झूमते चढ़े गये। इसके अलावा द्वारा भक्तिमय
संगीत के संग नृत्य नाटिका का
अद्भुत संसार लोगों का जन भोग
लिया। भजनों ने भगवान् श्री कृष्ण के
भजनों पर जनकर अमृत स्नान किया। कृष्ण के भजनों ने लोगों को
दीवाना बना दिया।

अपने कर्तव्यों का पालन करने
की शक्ति दें।

इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के
रूप में रक्षा राज्य मंत्री संजय
सेठ, कर्मचारी सिंह, सीपी सिंह
सहित कई विशिष्ट गणपात्र
लोग भौमूल थे। मुख्य अतिथि
राज्यपाल का उत्पात समिति के
संरक्षक सह रक्षा राज्य मंत्री
संजय सेठ, अजय मार, सीपी
सिंह, मुकेश काबरा सहित
आयोजन समिति के सदस्यों
ने किया। पुरुष गोविंदा की टीमों ने
हांडी फोड़े प्रतियोगिता में हिस्सा
लिया।

श्रीकृष्ण का जीवन इस
बात का प्रतीक है कि जीवन में
चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों
न आयें, हमें सदैव धर्म के पथ
पर अड़िया रहना चाहिए। आज
के युग में, जब हम विभिन्न
सामाजिक और नैतिक चुनौतियों
का समान कर रहे हैं, हमें
भगवान् श्रीकृष्ण के जीवन और
उद्देशों से सीखने की जरूरत
है। उनके बाल लीलाओं से लेकर
उनके बुद्ध नीति तक, हर घटना
में हमें वह समझने की प्रेरणा
मिलती है कि परिवर्थनियाँ चाहे
जैसी भी हों, हमें धैर्य, साहस
और बुद्धिमत्ता से काम लेना
चाहिए। श्रीकृष्ण जन्माष्टी का
यह पान अवसर हमें
आत्मनिरोक्षण करते और अपने
जीवन में उनके आदर्शों को
अपनाने का संदेश देता है।
भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को
धर्म के पथ पर चलने और

महिला गोविंदा की टीमों ने
लिया हिस्सा लिया।

चड़ी महिला समिति

महिला राधा रानी, रिम्स

बुरक महिला समिति

3 टीमों ने हिस्सा लिया

पुरुष गोविंदा के लिए हांडी की

अंकी 25 फीट

वहां महिला गोविंदा के लिए 20 फीट की ऊंचाई रखी गयी थी।

वहां आयोजन समिति के द्वारा 4

मिनट का समय सभी गोविंदा

टीमों को दिया गया था।

पुरुष एवं महिला गोविंदा अपनी टीमों

के साथ अलग-अलग रंग की

टी शर्ट में थे प्रेलेक टीमों में 25

से 30 गोविंदा शामिल थे।

जिनकी उम्र 18 वर्ष से ऊपर

थी।

वहां आयोजन समिति के द्वारा 4

मिनट का समय सभी गोविंदा

टीमों को दिया गया था।

पुरुष एवं महिला गोविंदा अपनी टीमों

के साथ अलग-अलग रंग की

टी शर्ट में थे प्रेलेक टीमों में 25

से 30 गोविंदा शामिल थे।

जिनकी उम्र 18 वर्ष से ऊपर

थी।

मटकी फोड़े प्रतियोगिता को

संपन्न कराने में इनका रहा

सहयोग। राज वर्मा, बबलू

चौधरी, ललन श्रीवास्तव, नीरज

चौधरी, धीरेष सिंह, संजय

गोविंद, नीरज कुमार, आनंद

जैसी छोटी छोटी गोविंदा

की टीमों ने दही-हांडी

फोड़े प्रतियोगिता में हिस्सा

लिया।

कृष्ण की जीवन से यहां

जीवन की अद्भुतता और

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण हम सभी को

धर्म के पथ पर चलने और

भगवान् श्रीकृष्ण

संपादकीय

जम्मू-कश्मीर में नये दौर की आस

ज म्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए नामांकन भरने की अखिरी तारीख खत्म हो गयी है, लेकिन तामम बड़ी पार्टियों के बीच असमंजस और अनिश्चितता जैसे खबर होने का नाम नहीं ले रही है। कुछ हद तक अनिश्चितता हर चुनाव में होती है, लेकिन जम्मू-कश्मीर के मामले में हालात सामान्य से ज्यादा जटिल हैं और इस असमंजस के पीछे उसकी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता।

गठबंधन और एजेंडा: विषयी खेमे में माने जाने वाले राज्य के तीनों प्रमुख दलों में संघर्ष और संघर्ष, दोनों का दिलचस्प घालमेल दिख रहा है। नैशनल कांग्रेस और कांग्रेस के लीच सभी 90 सीटों पर गठबंधन की घोषणा कर दी गयी, लेकिन उसके बाद भी जब किसी सूरत में सभी सीटों पर सहमति नहीं बन सकी, तो कहा गया कि पांच सीटों पर 'दोस्ताना मुकाबला' होगा। पीड़ीपी इस गठबंधन से बाहर है। फिर भी मुझे की एक रुपता के चलते न सिफ उमर अब्दुल्ला उससे अपनी पार्टी के खिलाफ प्रत्याशी न खड़ा करने को कह रहे हैं, बल्कि खुद महबूता भी कह चुकी हैं।

एक दशक पहले यानी 2014 में हुए विधानसभा चुनाव के समय अनुच्छेद 370 के तहत विशेष दर्जे से भी वीर्यत है। उस चुनाव के दो सबसे बड़ी और निलकंठ सरकार बनाने वाली पार्टी पीड़ीपी और भाजपा एक-दूसरे की धूर विरोधी हो चुकी है।

अगर उनके एजेंडे को स्वीकार किया गया, तो गठबंधन का समर्थन करेंगी। सूची की वापसी: भाजपा किसी बड़े दल के साथ गठबंधन में नहीं है, इसलिए वहां इस तरह की गफलत नहीं है, लेकिन निर्णय लेना और उसे लागू करना वहां भी कम मुश्किल नहीं है। स्थिति यह है कि पार्टी ने सोमवार को एक अधिक गठबंधन योग्यता खोते खोते जा चुके हैं और उन्हें विशेष दर्जे के लिए वैशिक मानदंडों की तुलना में कहाँ अधिक है। बैंक खाते खोले जाने से महिलाओं (जनधन खातों में 55% हिस्सेदारी) के साथ-साथ पिरामिड के निचले हिस्से के लोगों को भी सशक्त बनाने में मदद मिली बैंकोंका सरकार ने विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के हिस्से का संबंधित बिना किसी लोकेज को सीधे उन्हें प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) का उपयोग किया।

भारत ने तीन महत्वपूर्ण आयामों को एक साथ जोड़कर अपनी डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना कार्यनीति को

सार्वानीपूर्वक तैयार किया जिससे यह संभव हुआ जैसे कि जैम ट्रिनीटी और बैंक खाता (जनधन) इस ट्रिनीटी का

एक महत्वपूर्ण हिस्सा था,

इसके अतिरिक्त डिजिटल पहचान (आधार) और मोबाइल नंबर भी इसका हिस्सा हैं।

डीबीटी के उपयोग के माध्यम से इसने राजकोषीय बचत को बढ़ावा दिया। मार्च, 2023 तक संचयी बचत रुपए 3.5 लाख करोड़ होने का अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करती है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता निली है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

भारत ने तीन महत्वपूर्ण आयामों को एक साथ जोड़कर अपनी डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना कार्यनीति को सार्वानीपूर्वक तैयार किया जिससे वह सभव हुआ जैसे कि जैम ट्रिनीटी और बैंक खाता (जनधन) इस ट्रिनीटी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था,

इसके अतिरिक्त डिजिटल पहचान (आधार) और मोबाइल

नंबर भी इसका हिस्सा हैं।

डीबीटी के उपयोग के माध्यम से इसने राजकोषीय बचत को बढ़ावा दिया। मार्च, 2023 तक संचयी बचत रुपए 3.5 लाख करोड़ होने का अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान की है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

जनधन की शुरुआत के दो साल बाद, अप्रैल, 2016 में भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई नामक एक तत्काल भुगतान प्रणाली की शुरुआत की अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान की है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

करके इसमें जनधन ने प्रमुख भूमिका का संकेत मिलता है।

जनधन की शुरुआत के दो साल बाद, अप्रैल, 2016 में भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई नामक एक तत्काल भुगतान प्रणाली की शुरुआत की अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान की है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

करके इसमें जनधन ने प्रमुख भूमिका का संकेत मिलता है।

जनधन की शुरुआत के दो साल बाद, अप्रैल, 2016 में भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई नामक एक तत्काल भुगतान प्रणाली की शुरुआत की अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान की है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

करके इसमें जनधन ने प्रमुख भूमिका का संकेत मिलता है।

जनधन की शुरुआत के दो साल बाद, अप्रैल, 2016 में भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई नामक एक तत्काल भुगतान प्रणाली की शुरुआत की अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान की है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

करके इसमें जनधन ने प्रमुख भूमिका का संकेत मिलता है।

जनधन की शुरुआत के दो साल बाद, अप्रैल, 2016 में भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई नामक एक तत्काल भुगतान प्रणाली की शुरुआत की अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान की है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

करके इसमें जनधन ने प्रमुख भूमिका का संकेत मिलता है।

जनधन की शुरुआत के दो साल बाद, अप्रैल, 2016 में भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई नामक एक तत्काल भुगतान प्रणाली की शुरुआत की अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैंक खाते तक पहुँच है और उन्हें निःशुल्क रुपे कार्ड प्रदान किया गया है जिससे अर्थव्यवस्था ने नकटी के कम उपयोग को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान की है। डीबीटी के 65% से अधिक लाभार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में जनधन द्वारा निभायी गयी भूमिका का संकेत मिलता है।

करके इसमें जनधन ने प्रमुख भूमिका का संकेत मिलता है।

जनधन की शुरुआत के दो साल बाद, अप्रैल, 2016 में भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई नामक एक तत्काल भुगतान प्रणाली की शुरुआत की अनुमान है जबकि सरकार लगभग रुपए 7 लाख करोड़ सालाना अंतरित करता है। बैंक रहित लोगों के पास अब बैं

